Dr. Madan Paswan, History.
Class: B.A. Part-I (Hons.+Sub.) Paper-1st
Topic :- Unit-III (b) Satvahans.

Lecture No. 17.
Date - 22.07.2020
From page no. 1 only.

आन्ध्र सातवाहन

सातवाहन वंश की स्थापना सिमुक ने 30 ई० पु० में कण्ववंशी शासक 'सुशर्मा' की हत्या करके की थी। ऐतरेय ब्राह्मण में सबसे पहले इस जाति का उल्लेख पाया गया है। इस ग्रंथ के अनुसार विश्वामित्र के वंशजों ने गोदावरी और कृष्णा नदियों के बीच के प्रदेशों में जाकर आर्येतर जातियों से विवाह किया। इन विवाहों के परिणामस्वरूप जिस जाति का उद्भव हुआ, उसे आन्ध्र कहा गया। पुराणों में इस राजवंश को 'आन्ध्रभृत्य' कहा गया है। अधिकांश इतिहासकारों का मत है कि सातवाहन मूलतः महाराष्ट्र के निवासी थे, किन्तु शकों द्वारा परास्त किये जाने पर वे कृष्णा और गोदावरी नदियों के मध्य आन्ध्र प्रदेश में बस गये और आन्ध्र कहलाने लगे। इसकी राजधानी महाराष्ट्र में प्रतिष्ठान या पैठान थी। इस वंश के संस्थापक सिमुक के पश्चात् कृष्ण शासक हुआ। उसके पश्चात् शातकर्णी प्रथम शासक बना। शातकर्णी प्रथम इस वंश का प्रथम उल्लेखनीय राजा था। उसने 'सम्राट' की उपाधि धारण की। नानाघाट अभिलेख में उसे 'अप्रतिहत' चक्र दक्षिणापथपति कहा गया है। उसने दो बार अश्वमेध यज्ञ भी किया था। मालवा, उत्तरी कोंकण व महाराष्ट्र का अधिकांश भाग उसके साम्राज्य में सम्मिलित था। शातकर्णी के दोनों पुत्र—

① शक्तिश्री,
② वेदश्री।

ये दोनों अल्पवयस्क थे, अतः उनकी माता नागनिका उनका संरक्षक बनी। इसके पश्चात् गौतमीपुत्र शातकर्णी शासक हुआ। गौतमीपुत्र शातकर्णी इस वंश का महानतम राजा था। उसे सातवाहन वंश का पुनरुद्धारक भी कहा जाता है। गौतमीपुत्र ने शक-पल्लव एवं क्षहरात वंश के शासकों को पराजित किया। शक शासक नहपान को परास्त कर उसकी चाँदी के सिक्कों पर अपना नाम खुदवाया। प्रमुख विदेशी शासकों का नाम :—

विदेशी नाम	भारतीय नाम	महान शासक
डेमेट्रियस	यवन	मीनाण्डर
सीथियन	शक	रूद्रदामन
पार्थियन	पहलव	गोंडोफर्नीज
यू-ची	कुषाण	कनिष्क

गौतमीपुत्र ने नासिक के बौद्ध संघ को 'अजकालकिय' नामक क्षेत्र एवं कार्ले के भिक्षुक संघ को 'करजक' नामक ग्राम दान में दिये। गौतमीपुत्र ने 'विन्ध्यपति' तथा 'राजाराजा' की उपाधि धारण की। नासिक के अभिलेखों में उसके लिये ब्राह्मण विशेषण का प्रयोग किया गया है। उसको क्षत्रियों के दर्प और मान को दलने वाला तथा शक्ति में परशुराम के समान कहा गया है।

(Continue.....)